IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बौद्ध धर्म में मानवतावाद :डॉक्टर भीमराव अंबेडकर

1Bhoopendra Kumar, 2Dr. Sanjay Kumar Singh

1Research Scholar , 2Professor

1Dr. B R Ambedkar university Agra ,

2Dr B R Ambedkar university Agra (IOP vrindavan)

आधुनिक युग विज्ञान और तकनीकी का है। आज मनुष्य ने वैज्ञानिक अविष्कारों के द्वारा भौतिक सुख सुविधाओं को प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कर लिया है । जीवन के कई क्षेत्रों में हमने भौतिक उपलब्धियां प्राप्त की है- संचार, यातायात ,चिकित्सा, आवास, भोज्य पदार्थ आदि कई क्षेत्रों में अभूतपूर्व उपलब्धियां को प्राप्त करने वाला मनुष्य आज भी मानवीय मूल्यों को ढूंढ रहा है। धार्मिक कट्टरता, जातीय विद्वेष, क्षेत्रीय संघर्ष ,कट्टर राष्ट्रवाद, नक्सलवाद, लिंग- भेद, जैसे कई मानवीय समस्याएं हमारे सामने आज भी वीभत्स रूप लिए खड़ी है। मानवीय मूल्यों के खोज में आज भी हम भटक रहे हैं । चाहे विश्व युद्ध हो या दो देशों के बीच युद्ध अंततः इसमें मानवता पराजित होती है । धार्म, जाति, क्षेत्र ,वर्ण और लिंग भेद से जुड़े अपराध के पीछे निश्चित रूप से उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों का अभाव रहा है । आधुनिक काल में दो विश्व युद्ध ने पूरी मानवता को चिंतन करने पर विवश कर दिया है कि मनुष्य जीवन का अर्थ क्या है ? मनुष्य किन मूल्यों को अपनाकर मानवता के उज्जवल भविष्य की संकल्पना कर सकता हैं? यहां एक बात स्पष्ट है कि हमने वैज्ञानिक आविष्कारों के माध्यम से सभ्यता का विकास किया है । प्रश्न उठता है कि क्या हमने संस्कृति के क्षेत्र में भी विकास किया हैं? बुद्ध ,महावीर और उपनिषद के ऋषियों द्वारा प्रस्तुत मानवीय मुल्यों को देखने से ऐसा लगता है सभ्यता में भले ही हम बहुत आगे आ गए हैं परंतु सांस्कृतिक विकास में हम प्राचीन काल की अपेक्षा पीछे हैं। बुद्ध और महावीर ने न केवल धार्मिक रूप से समता मूलक दृष्टि प्रदान किया बल्कि समाज में भी सभी प्रकार के भेदभाव को अस्वीकार किया। बुद्ध, द्वारा प्रस्तावित जीवन मूल्यों को यदि हम स्वीकार करें तो सभी प्रकार के भेदभाव और असमानता समाप्त हो सकती है तथा समता मूलक समाज की स्थापना कर विश्व बंधुत्व की अवधारणा को साकार किया जा सकता है।

प्राचीन काल से लेकर अब तक दार्शनिकों, बुद्धिजीवियों और चिंतकों ने मनुष्य को गरिमा और सम्मान सहित जीने के लिए अनेक दृष्टियां प्रदान की। इन सभी दृष्टियों में महात्मा बुद्ध द्वारा प्रदान किया गया जीवन मूल्य आज बुद्धिजीवियों और मानवतावादियों के लिए प्रेरणा स्रोत बने हैं । क्योंकि बुद्ध का चिंतन मनुष्य केंद्रित होने के साथ ही साथ वैज्ञानिक और बुद्धि परक है। प्रस्तुत लेख में डॉ बी आर अंबेडकर द्वारा प्रस्तुत बौद्ध धर्म में मानवतावाद का दार्शनिक विश्लेषण किया जाएगा। इस लेख में यह जानने का प्रयास होगा कि किस प्रकार बुद्ध द्वारा प्रस्तावित जीवन दर्शन विश्व बंधुत्व और मानवतावाद की नींव बन सकता है।

बौद्ध धर्म की ऐतिहासिक और धार्मिक पृष्ठभूमि:

भारत की दार्शनिक परंपरा में बौद्ध दर्शन नास्तिक दर्शन के रूप में स्वीकृत है। बुद्ध ,महावीर और चार्वाक दर्शन - यह तीनों ही वेदों को स्वीकार नहीं करते हैं। बुद्ध के समय में वैदिक कर्मकांड को धर्म का अनिवार्य अंग माना जाता था। वर्ण व्यवस्था ने उच- नीच के आधार पर समाज का विभाजन किया था। वैदिक व्यवस्था में मनुष्य अति प्राकृतिक शक्तियों के द्वारा कल्याण की कामना करता है। इसके लिए व्यक्ति को वैदिक कर्मकांड करना अनिवार्य माना जाता था। इन कर्मकांडों के द्वारा देवताओं से आशीर्वाद की अपेक्षा की जाती है। जबकि बौद्ध धर्म मनुष्य की समस्त समस्याओं को अनुभव और तर्क से सुलझाने का प्रयास करता है । बुद्ध ईश्वर या अलौकिक शक्तियों में आस्था नहीं रखते। डॉ आंबेडकर कहते हैं-" उनका पथ तर्क, विवेक, बुद्धि और विज्ञान का पथ है। यह कुरीतियों अंधविश्वासों से मुक्ति का पथ हैं, यह सभी के कल्याण का पथ है।"(1) बुद्ध ने मानवीय समस्याओं को सुलझाने में किसी देवता अथवा अतिप्राकृतिक शक्तियों का सहारा नहीं लिया । वह एक वैज्ञानिक की तरह मनुष्य को अनुभव और तर्क पर आधारित चिंतन विकसित करना चाहते हैं । इसी कारण आज के वैज्ञानिक युग में बुद्ध की महत्ता बढ़ती जा रही है । आज वैज्ञानिक खोजो ने धर्म की बहुत सी मान्यताओं को नष्ट कर दिया है । ऐसी दशा में "आधुनिक युग में तर्क विवेक को जानने समझने वाले व्यक्ति को यदि किसी धर्म को ग्रहण करना है तो उसके लिए बुद्ध का धम्म ही हो सकता है।" (2) क्योंकि बुद्ध का धम्म विज्ञान और तर्क से मेल खाता है । इसलिए बुद्ध की प्रासंगिकता देश और काल की सीमा से बाधित नहीं होती।

बुद्ध ने वैदिक सामाजिक व्यवस्था अस्वीकार किया । क्योंकि वैदिक सामाजिक व्यवस्था भेदभाव पर आधारित थी। इसके विपरीत बुद्ध ने समानता पर आधारित धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था का समर्थन किया। बुद्ध के धर्म में मनुष्य केंद्र में है, न की ईश्वर, वैदिक देवता अथवा कोई काल्पनिक सिद्धांत। बुद्ध ने मनुष्य को नियंत्रित करने वाली किसी अलौकिक सत्ता, जैसे ईश्वर या देवी देवताओं के अस्तित्व में विश्वास नहीं किया। बुद्ध के अनुसार ईश्वर और नित्य आत्मा में विश्वास करना सम्यक दृष्टि में बाधक है । बुद्ध ने कर्म सिद्धांत के आधार पर नैतिक व्यवस्था की व्याख्या की। बौद्ध धर्म के अनुसार शुभ कर्मों का फल शुभ होता है और अशुभ कर्मों का फल दुखदाई होता है । हम अपने ही कर्मों से सुख और दुख प्राप्त करते हैं ना कि किसी अलौकिक सत्ता के कारण । इस प्रकार बुद्ध ने मानव केंद्रित और विज्ञान सम्मत धर्म का सूत्रपात किया । उनका कहना है कि जो सिद्धांत तर्क और अनुभव से प्रमाणित न किया जा

सके,उसे स्वीकार करने का कोई कारण नहीं है। बुद्ध की यह अवधारणा आज वैज्ञानिकों और बुद्धि जीवियों के लिए आकर्षण का कारण है।

बुद्ध ने समय में ही संघ में बिना किसी भेदभाव के सभी को समान स्थान दिया। बुद्ध के बाद उनके अनुयायियों ने बुद्ध के इस मानवतावादी दृष्टिकोण को विकसित किया। बौद्ध संघ में सभी वर्णों के लोग शामिल थे। बुद्ध ने अपने जीवनकाल में ही इस बात पर अत्यधिक जोर दिया कि सभी व्यक्ति समान है। उच- नीच का भेद धम्म के विरुद्ध है। बौद्ध धर्म के इस आदर्श को समझते हुए डॉक्टर अंबेडकर लिखते हैं- ' तथागत ने संघ में सभी के लिए प्रवेश द्वार खोल रखे थे। इसलिए अछूत और शूद्र हीन जाति के लोगों को भी बिना भेदभाव किए संघ में प्रवेश दिया । इनमें से सभी धर्म अध्ययन व अभ्यास से अर्हत हुए।"(3) में ईसा से 600 वर्ष पहले बुद्ध की यह अवधारणा आधुनिक मानवतावादियों के लिए महान प्रेरणा स्रोत है । इसलिए बुद्ध अपने इस महान मानवीय मूल्य के लिए आज और भविष्य में भी मानव जाति के उच्चतम मूल्य के महान नायक के रूप में रहेंगे।

बुद्ध ने चार आर्य सत्यो की खोज की। जो क्रमश इस प्रकार हैं- दुख है ,दुख का कारण है, दुख का निवारण है, और दुख निवारण का मार्ग है। बुद्ध ने संसार के स्वरूप को और मनुष्य के संसार में स्थिति को इन चार आर्य सत्यों में प्रस्तुत कर दिया है । बुद्ध कहते हैं कि संसार का स्वरूप ही ऐसा है कि इसमें दुख है । दुख का कारण संसार के बाहर नहीं है। मनुष्य जब तक संसार में है तब तक वह दुख प्राप्त करता रहेगा। अर्थात मनुष्य का संसार में होना ही दुखद है। कुछ विद्वानों ने बुद्ध के इस विचार को निराशावादी विचार कहा । बुद्ध के दर्शन को जब हम गहराई से देखते हैं तो पता चलता है कि बुद्ध निराशावादी नहीं है । सच यह है कि धम्म दुख होने को स्वीकार करता है। सच्चाई से इनकार नहीं करता ,लेकिन दुख को स्वीकार कर सारा जोर दुख को दूर करने पर भी देता है । मेरे धर्म में आशा और मानव जीवन का उद्देश्य दोनों शामिल है ।"(4) बुद्ध दुख के कारण को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि हर घटना के पीछे कोई न कोई कारण होता है। ठीक उसी प्रकार हमारे दुखों के पीछे भी कुछ कारण है । वह कारण है हमारा राग द्वेष पूर्ण कर्म । यदि हम कारण को समाप्त कर दें तो हमारे दुख भी समाप्त हो जाएंगे। कारण की अपेक्षा रखकर ही कार्य होता है । बुद्ध ने कारण कार्य के नियम को कर्म क्षेत्र में लागू किया। बुद्ध ने कर्म सिद्धांत को नैतिक क्षेत्र में लागू कर व्यक्ति के द्वारा किए गए कर्मों की जिम्मेदारी व्यक्ति को प्रदान कर दिया। बुद्ध कहते हैं कि हम जो कुछ भी हैं वह हमारे कर्मों का परिणाम है। यदि हम दुखों से मुक्त होना चाहते हैं तो हमें शुभ कर्मों को करना होगा। हमारे दुखों को कोई ईश्वर या दिव्य शक्ति दूर नहीं कर सकती । यहां तक की उन्होंने अपने को भी ईश्वर का अवतार या ईश्वर का दूत नहीं माना। डॉ आंबेडकर लिखते हैं -"तथागत बुद्ध ने कभी भी अपने को ईश्वर दूत या खुदा का पैगंबर होने का दवा नहीं किया। यदि किसी ने ऐसा किया तो भगवान ने इसका खंडन किया । "(5) इस प्रकार बौद्ध धर्म में किसी ईश्वर या अलौकिक सत्ता में विश्वास का स्थान नहीं है । बुद्ध कहते हैं दुख के कारण को हम स्वयं ही नष्ट कर सकते हैं । इसके लिए कोई दूसरा हमारी सहायता नहीं कर सकता । कोई देवता अथवा ईश्वर है ही नहीं इसलिए उनसे सहायता अथवा आशीर्वाद मिलने का प्रश्न ही नहीं बनता ।

बुद्ध कहते हैं उन्होंने दुखों को दूर करने का मार्ग ढूंढ लिया है। इस मार्ग पर चलकर सभी व्यक्ति दुखों से दूर हो सकते हैं। जब तक दुखों से स्थाई रूप से छुटकारा ना हो जाए तब तक व्यक्ति को बुद्ध द्वारा बताए गए मार्ग -अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। अष्टांगिक मार्ग शारीरिक और मानसिक अनुशासन हैं, जिसमें बुद्ध के मानवतावादी दृष्टिकोण का पूर्ण चित्रण है। यह अष्टांगिक मार्ग व्यक्तिगत अनुशासन तो है ही ,साथ ही साथ सामाजिक समरसता और सौहार्द का आधार भी है। इसमें व्यक्तिगत मुक्ति के साथ ही साथ समाज का कल्याण भी निहित है ।

करुणा: मानवता का मूल आधार

बुद्ध के दार्शनिक चिंतन मे मानवीय सद्गुणों में करुणा को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। करुणा में व्यक्ति दूसरों के दुख से स्वयं को जोड़ता है। इस गुण की विशेषता है कि व्यक्ति अन्य जीवों के दुखों को दूर करने के का प्रयास करता है। करुणा के साथ जब मैत्री भाव जुड़ता है तो वह अत्यंत व्यापक होकर सारे जगत में व्याप्त हो जाती है। अर्थात करुणा जहां मनुष्यों के बीच में घटती है वहीं पर मैत्री समस्त प्राणियों के प्रति होती है। डॉक्टर अंबेडकर कहते हैं- -करुणा का अर्थ है मनुष्यों के प्रति प्रेमपूर्ण सहानुभूति और मित्रता का अर्थ है सिर्फ मित्र या मानव मात्र में ही नहीं बल्कि सभी प्राणियों में सहानुभूति रखना । यहां पर यह बात स्पष्ट है कि बुद्ध के करुणा का पात्र केवल मनुष्य ही नहीं है बल्कि सभी जीव है । अर्थात उनकी करुणा के पात्र जगत के समस्त जीव हो जाते हैं । बुद्ध के बाद महायान शाखा ने तो करुणा को ही आधार बनाकर बोधिसत्व की अवधारणा को जन्म दिया ,जिसमें जीवों के कल्याण के लिए अपनी व्यक्तिगत मुक्ति को स्थगित कर दिया जाता है । यहां पर हम देखते हैं की करुणा बौद्ध धर्म में ऐसा तत्व है जो मानवतावाद की आधारशिला है। यदि भगवान बुद्ध के इस संदेश को हम व्यापक बना सके तो निश्चित रूप से मानव जाति अपने उच्चतम मूल्य को प्राप्त कर पृथ्वी को धन्य कर सकती है। करुणा बुद्ध के धर्म का आधार हैं, जिसमें हम निम्नलिखित जिससे कुछ निष्कर्ष निकालते हैं:

- करुणा बौद्ध धर्म में परम गुण है । इसमें व्यक्ति अन्य प्राणियों के दुख से स्वयं को जोड़ता हैं, और उसे दूर करने का प्रयास करता है ।

- करुणा का व्यापक रूप बोधिसत्व है ,जिसमें व्यक्ति अन्य जीवों की सहायता के लिए अर्थात उनके दुखों को दूर करने के लिए व्यक्तिगत मुक्ति का भी त्याग कर देता है। यह बौद्ध धर्म की सबसे अनूठी और महान अवधारणा है ,जो दुनिया के किसी अन्य धर्म में नहीं मिलता। बोधिसत्व की अवधारणा से व्यष्टि और समष्टि दोनों का कल्याण होता है।

अहिंसा: मानवता का मूल आधार

बुद्ध के धर्म में अहिंसा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है । हिंसा से मुक्ति के बिना आत्मा की मुक्ति की बात बौद्ध धर्म में नहीं समझी जा सकती। जैन धर्म में अहिंसा परमो धर्म है । जो की एक नियम है ,और अत्यंत कठोर है। बुद्ध ने परिवार और देश की सुरक्षा के लिए इस नियम को शिथिल किया। बुद्ध कहते हैं- -'सबसे मैत्री करो ताकि तुम्हें किसी को मारने की इच्छा न हो ।"(6) इस प्रकार बुद्ध ने अहिंसा को सकारात्मक स्वरूप प्रदान किया, वह है- मैत्री भाव । मैत्री भाव से क्षमाशीलता और सहिष्णुता का जन्म होता है।

बौद्ध धर्म में घृणा को क्षमाशीलता और सहिष्णुता से समाप्त करने का उपाय दिया गया है। बुद्ध कहते हैं कि घृणा से घृणा को नष्ट नहीं किया जा सकता है ,और न ही अपने भीतर सुख और शांति का जन्म हो सकता है। डॉक्टर अंबेडकर लिखते हैं - "धन्य है भगवान बुद्ध! जो मैत्री, करुणा और भाईचारे की शिक्षा देते हैं, इस पथ पर चलने वाले हर प्राणी को अपने दुखों से मुक्ति और सुख शांति का जीवन प्राप्त होता है ।"(7) बुद्ध की दृष्टि में जब हम दूसरे प्राणियों के प्रति करुणा का भाव रखते हैं तब अहिंसा स्वत: ही हमारे स्वभाव में घटित होती है। अहिंसा अब हिंसा न करने तक सीमित नहीं है- अर्थात यह कोई नकारात्मक अवधारणा नहीं हैं, बल्कि प्रेम और सौहार्दपूर्ण हृदय से प्राणियों के प्रति जो कार्य होते हैं, वही अहिंसा का मूर्त रूप है । इस प्रकार अहिंसा करुणा के प्रतिफल के रूप में प्रकट होती है। अर्थात जब हम करुणा से परि पूर्ण होते हैं, तब हमसे हिंसा हो ही नहीं सकती। बल्कि सभी प्राणियों के प्रति प्रेम और सद्भाव होगा। डॉ आंबेडकर कहते हैं-" अहिंसा बुद्ध की शिक्षाओं का अति महत्वपूर्ण अंग है और यह करुणा और मैत्री से घनिष्ठ रूप से जुड़ा है ।" मनुष्यों के प्रति स्वाभाविक रूप से करुणाभाव में स्थित होना ही उच्च मानवीय मूल्य है। इससे एक दूसरे के प्रति विश्वास और सम्मान प्रकट होता है जो सुख और शांति का आधार है। इसी के आधार पर सामाजिक समरसता और शांति की स्थापना संभव होती है। यही वह तत्व है जो मानवता को सुख और शांति की और ले जाता है। बौद्ध धर्म के अहिंसा संबंधी अवधारणा से निम्नलिखित निष्कर्ष निकालते हैं:-

- बुद्ध के धर्म में हिंसा को स्थान नहीं है।

- बुद्ध के धर्म में सभी प्राणियों के प्रति करुणा और मैत्री का भाव है ।

- मैत्री भाव से समाज में सौहार्द् और और शांति का मार्ग सुलभ होता है।

- अहिंसा व्यक्तिगत जीवन में शांति और सुख का आधार हैं, जबकि सामाजिक जीवन में यह सौहार्दपूर्ण वातावरण के निर्माण में सहायक होता है।

करुणा और अहिंसा से सामाजिक समरसता की उत्पत्ति:

जब तक समाज में समरसता ना हो ,सद्भाव ना हो, तब तक समाज सुखी नहीं हो सकता । बुद्ध के द्वारा प्रस्तुत करुणा और अहिंसा जैसे उच्च सद्गुणों से सामाजिक समरसता का आधार निकलता है। सामाजिक भेदभाव जैसे जाति-भेद छुआछूत लिंग भेद और वर्ण व्यवस्था को यहां कोई स्थान नहीं है। यहां सभी मनुष्य समान है। भेदभावपूर्ण व्यवस्था मनुष्य की गरिमा और धम्म के विपरीत है। डॉ आंबेडकर लिखते हैं -कोई जाति नहीं, कोई असमानता नहीं ,कोई श्रेष्ठ नहीं ,कोई नीच नहीं ,सभी सामान है। बुद्ध ने पूरे जोर से तत्कालीन समाज मे व्याप्त असमानता का विरोध किया। समाज के शोषित वर्गों को संघ में शामिल कर उन्होंने समान अधिकार तथा सम्मान दिया। बुद्ध द्वारा प्रस्तुत सामाजिक व्यवस्था में उच -नीच जैसे भेदभावपूर्ण व्यवस्था को कोई स्थान नहीं था। गरीब और असहाय वर्ग के लोगों को दान और करुणा के द्वारा सहायता करना बुद्ध के धम्म का प्रमुख उद्देश्य था। स्त्री और पुरुष दोनों ही समान रूप से बुद्ध के संघ में है । प्रकृति अछूत स्त्री है। उसे भी बुद्ध ने अपने संघ में सम्मिलित कर समानता का अधिकार दिया। डॉक्टर अंबेडकर लिखते हैं-" जिस सामाजिक व्यवस्था ने प्रकृति को अछूत माना, उसे भगवान बुद्ध ने दीक्षा देकर संघ में शामिल किया। भिक्षुणी के रूप में प्रकृति ने बुद्ध की शिक्षाओं को गहराई से समझा, उनका पालन व प्रचार किया ,ध्यान साधना की ऊंचाइयों तक पहुंची।"(8) बौद्ध धर्म में सामाजिक व्यवस्था संबंधी सिद्धांत से निम्नलिखित निष्कर्ष निकालते हैं:

- बुद्ध का धर्म मनुष्य पर केंद्रित था। यहां पर स्त्री पुरुष को समान अधिकार उपलब्ध हैं। मनुष्य के स्तर पर कोई श्रेष्ठ और कोई नीच नहीं है।

- वर्ण व्यवस्था ,जातिवाद लिंग- भेद जैसे भेदभावपूर्ण सिद्धांत का बहिष्कार किया गया। इसके स्थान पर सभी को समान अधिकार और सम्मान प्रदान किया गया।

- सामाजिक समरसता और सद्भाव को बढ़ाने के लिए दान, सहायता, करुणा और मैत्री जैसे उच्च मानवीय सद्गुणों को बढ़ावा दिया गया।

- शोषित वर्गों को धार्मिक अधिकार प्रदान किए गए । सभी प्रकार के भेदभाव को धम्म के विपरीत माना गया।

व्यक्तिगत मुक्ति और बोधिसत्व की अवधारणा:

बौद्ध धर्म में दुखों से आत्यंतिक निवृत्ति ही जीवन का लक्ष्य है। इसे बुद्ध ने निर्वाण कहा। बुद्ध के अनुसार जब तक जन्म है तब तक दुख है। दुख की निवृत्ति तृष्णा के नाश से ही होती है। बौद्ध धर्म में निर्वाण का अर्थ हैं- जहां पर कोई दुख नहीं है। जब हमारे भीतर लोभ और तृष्णा ना हो तो वह अवस्था निर्वाण की अवस्था है । अंबेडकर कहते हैं-" शील और सदाचार का जीवन ही निर्वाण है । "(9) व्यक्ति अपने ही प्रयास से निर्वाण को उपलब्ध हो सकता है। यही दुखों से निवृत्ति की अवस्था है । इसके लिए किसी अति प्राकृतिक शक्ति का आशीर्वाद या कृपा की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि इस संसार को बनाने वाला कोई ईश्वर नहीं हैं, इसलिए उसकी कृपा का प्रश्न ही नहीं बनता। बुद्ध ने दुखों के निवृत्ति के लिए ईश्वर या देवताओं की सहायता लेने संबंधी मान्यता को धम्म के विरुद्ध माना। क्योंकि यह मान्यताएं तर्क बुद्धि और विवेक के विरुद्ध हैं। बुद्ध ऐसी किसी भी मान्यता को या विश्वास को छोड़ने का आग्रह करते हैं जो तर्क -बुद्धि और अनुभव के विरुद्ध हैं- चाहे वह परंपरा कितनी ही पुरानी क्यों ना हो । बुद्ध के अनुसार" मैं ऐसे किसी मान्यता ,परंपरा या सिद्धांत को नहीं मानता जो तर्क, विवेक बुद्धि ,ज्ञान और अनुभव पर आधारित नहीं हो, प्रमाणित नहीं हो और मानव हित की नहीं हो ।" (10)

बुद्ध ने दुखों से निवृत्ति के लिए अष्टांगिक मार्ग का उपदेश दिया, जो इस प्रकार हैं- सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वचन, सम्यक कर्म, सम्यक आजीव, सम्यक प्रयास, सम्यक् स्मृति, और सम्यक समाधि। यही वह अनुशासन है जिस पर चलकर व्यक्ति अपना और समाज दोनों का कल्याण करता है । व्यक्ति इस मार्ग पर चलकर दुखों से सदैव के लिए मुक्त हो जाता है। अष्टांगिक मार्ग अविद्या को दूर करने वाला मार्ग है। अविद्या के नाश होते ही व्यक्ति जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है। तृष्णा के समाप्त होते ही उसके समस्त दुख समाप्त हो जाते हैं । समाज और संसार में रहते हुए वह सुख और शांति से रहता हैं, तथा मृत्यु के उपरांत उसे पुनर्जन्म और उससे जुड़े हुए दुखों का भय नहीं रहता। साथ ही साथ जब तक वह शरीर में रहता है उसके द्वारा जगत का कल्याण होता है। यही मानवतावाद का सर्वोच्च उदाहरण है। मानवतावाद वह सिद्धांत है जो मनुष्य के हितों की की बात करता है -मनुष्य को केंद्र मानकर उसके कल्याण के लिए कार्य करता है। बुद्ध का धर्म इस दृष्टि से मानवतावाद का सर्वोच्च प्रतिनिधि है। बौद्ध धर्म में व्यक्तिगत मुक्ति और बोधिसत्त की अवधारणा से महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकालते हैं:

- बुद्ध के धर्म में व्यक्तिगत मुक्ति और सामाजिक सद्भाव दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

- बुद्ध के अनुसार करुणा मैत्री और अहिंसा जैसे सद्गुण अपनी मुक्ति का कारण बनते हैं ,साथ ही साथ सामाजिक सुख और शांति के भी आधार हैं।

- बौद्ध धर्म में बोधिसत्व की अवधारणा सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा मानी जाती है। इसमें जीव अपनी व्यक्तिगत मुक्ति को स्थगित कर देता है । वह अपने भीतर महा करुणा का संचार कर संसार के जीवों के दुखों को दूर करने का संकल्प लेता है ।

- बौद्ध धर्म में मनुष्य अपने निजी प्रयासों से दुखों से मुक्त होता है। ईश्वर और अलौकिक शक्तियों में विश्वास नहीं किया गया है। इस धर्म में मानवीय प्रयासों से ही मानवीय समस्याओं को हल करने का सुझाव है । इस प्रकार बौद्ध धर्म संवेदनशील ,करुणा संपन्न वैज्ञानिक सोच और तर्क बुद्धि बुद्धि युक्त लोगों के आकर्षण का विषय बन जाता है।

निष्कर्ष:

बौद्ध धर्म दुनिया का पहला ऐसा धर्म है जिसने स्पष्ट किया कि मनुष्य अपने कर्म और सद्गुणों से अपना और समाज का कल्याण कर सकता है। इसके लिए किसी ईश्वर या अलौकिक सत्ता में विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है। इस संसार में जितनी भी मानवीय समस्याएं हैं ,उसे मनुष्य अपने ही प्रयास से दूर कर सकता है । बुद्ध पहले ऐसे धार्मिक हैं जो किसी चमत्कार और अंधविश्वास से दूर रहकर तर्क और विवेक से जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए कहते हैं। " इतिहास में इससे पहले किसी व्यक्ति ने ऐसे धर्म को प्रस्तुत नहीं किया जो रहस्य और चमत्कार पूर्ण बातो तथा काल्पनिक ईश्वर की अवधारणा से मुक्त हो, जिसमें ईश्वरीय आदेश न हो। "(11) आज भी हम धर्म और ईश्वर के नाम पर युद्ध करते हैं । सिद्धांत और परंपरा के नाम पर एक दूसरे से द्वेष करते हैं। धर्म के नाम पर मानवता का खून बहाते हैं। ऐसे में भगवान बुद्ध के द्वारा प्रस्तुत धर्म आशा की किरण बनता है ,जिसका अनुसरण कर हम मनुष्य के कल्याण की बात सोच सकते हैं। क्योंकि बुद्ध ऐसे धार्मिक हैं जो कहते हैं कि व्यक्ति अपने सद्गुणों के द्वारा दुखों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है ,साथ ही साथ सामाजिक सौहार्द भी विकसित कर सकता है।" बुद्ध के धम्म का मार्ग सत्य का मार्ग है, प्रकृति के नियमों का मार्ग है, सत्य के अलावा और कुछ नहीं, सिर्फ सत्य है।"(12) आज का युग वैज्ञानिक, तकनीकी और तर्क बुद्धि का युग हैं। डॉक्टर बी. आर. अंबेडकर द्वारा प्रस्तुत बुद्ध का धम्म अंधविश्वास और काल्पनिक मान्यताओं से दूर,तर्क और विवेक पर आधारित तथा मानव कल्याण के लिए प्रतिबद्ध होने के कारण मानवता के उत्कृष्ट भविष्य का आधार बन सकता है ।

संदर्भ ग्रंथ:

1. अंबेडकर बी. आर.(2023)भगवान बुद्ध और उनका धम्म , जयपुर , बुद्धम पब्लिशर्स पृष्ठ-87

2. अंबेडकर बी.आर .(2023) भगवान बुद्ध और उनका धम्म, जयपुर, बुद्धम पब्लिशर्स ,पृष्ठ-6

3. अंबेडकर बी. आर. (2023) भगवान बुद्ध और उनका धम्म, जयपुर ,बुद्धम पब्लिशर्स ,पृष्ठ-141

4. अंबेडकर बी.आर.(2023) भगवान बुद्ध और उनका धम्म, जयपुर, बुद्धम पब्लिशर्स, पृष्ठ-87

5. अंबेडकर बी.आर.(2023) भगवान बुद्ध और उनका धम्म ,जयपुर, बुद्धम पब्लिशर्स, पृष्ठ-159

6. अंबेडकर बी.आर.(2023) भगवान बुद्ध और उनका धम्म ,जयपुर,बुद्धम पब्लिशर्स ,पृष्ठ-235

7. अंबेडकर बी.आर.(2023) भगवान बुद्ध और उनका धम्म ,जयपुर ,बुद्धम पब्लिशर्स, पृष्ठ-87

8. अंबेडकर बी.आर .(2023) भगवान बुद्ध और उनका धम्म ,जयपुर ,बुद्धम पब्लिशर्स ,पृष्ठ-150

9. अंबेडकर बी आर (2023) भगवान बुद्ध और उनका धम्म, जयपुर ,बुद्धम पब्लिशर्स ,पृष्ठ-170

10. अंबेडकर बी.आर .(2023) भगवान बुद्ध और उनका धम्म ,जयपुर ,बुद्धम पब्लिशर्स, पृष्ठ-136

11. अंबेडकर बी.आर .(2023) भगवान बुद्ध और उनका धम्म ,जयपुर, बुद्धम पब्लिशर्स ,पृष्ठ-95-96

12. अंबेडकर बी.आर .(2023) भगवान बुद्ध और उनका धम्म, जयपुर, बुद्धम पब्लिशर्स ,पृष्ठ-87